ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. No.- 153-155**
I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-I, Issues-35, YEAR-Jan-Mar. 2025

वैश्विक राजनीति में भारत की बढ़ती भूमिका: एक विष्लेशण

डॉ0 रमा भाटिया
एसोसिऐट प्रोफेसर, रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन, डी0ए0वी0 कालेज, कानपुर (उ0प्र0) भारत

Received-03.03.2025, Revised-10.03.2025 Accepted-16.03.2025 **E-mail : dr.ramabhatia48@gmail.com**

सारांशः भारत एक समृद्ध और विवधतापूर्ण इतिहास वाला देश है। हजारों साल से विश्व मामलों में इसकी महत्वपूर्ण भमिका रही है और आज भी इसका प्रभाव जारी है। इसकी अर्थव्यवस्था तेजी से बढ़ रही है। भारत आज दुनिया के प्रभावशाली देशों में से एक है जिसकी मौजूदगी सभी प्रमुख महाद्वीपों में है। इस शोध पत्र में मौजूदा दुनिया में भारत की भूमिका एवं विभिन्न महाद्वीपों पर इसके प्रभाव और वैश्विक मंच पर भारत के लिए आने वाली चुनौतियों को जानने का प्रयास किया गया हैं।

कुंजीभूत शब्द– वैश्विक राजनीति, अर्थव्यवस्था, वैश्विक मंच, पैसेफिक क्षेत्र, जलवायू परिवर्तन, मानवता,

प्रस्तावना–भारत हमेशा से ही एक शान्तिपूर्ण देश रहा है जो सभी देशों के साथ परस्पर सम्मान और सहयोग के लिए प्रयासरत रहा है। भारत गुटनिरपेक्ष आन्दोलन के सस्थांपक सदस्यों में से एक है और इसकी स्थापना में महत्वपूर्ण भमिका निभायी है। यह आन्दोलन यह सुनिश्चित करने के लिए बनाया गया था कि छोटे और नये स्वतन्त्र देश शीत युद्ध के दौरान सयुक्त राज्य अमेरिका या सोवियत सघं की कक्षा में न फसें। आज जब वैश्विक स्तर के मामलों में पड़ने से पश्चिमी देश अपने कदम पीछे खीच रहे हैं, तब भारत कुशलता के साथ दुनिया के साथ अपने सम्बन्ध स्थापित कर वैश्विक स्तर पर मची खीचंतान में दखल देते हुये अपने लिए अनूकूल जगह बना रहा है। जिस प्रकार से भारत तेजी के साथ प्रगति कर रहा है। वो न सिर्फ भारत की 140 करोड़ की आबादी के लिए बेहद महत्वपूर्ण है बल्कि इसका प्रभाव कंही न कंही पूरी दुनिया पर भी पड़ेगा। वैश्विक स्तर पर भारत की भूमिका आज इतनी अहम हो गयी है कि इडों पैसेफिक क्षेत्र में स्थिरता से लेकर वैश्विक स्तर पर लोकतन्त्र की मजबूती तक सतत् विकास लक्ष्यों को हासिल करने से लेकर जलवायू परिवर्तन की समस्या से निपटने तक और आज के दौर में ऐसे हर अहम मुददे का समाधान तलाशने की कामयाबी भारत द्वारा की जाने वाली कार्यवाही पर ही निर्भर करती है। कहने का मतलब है कि तमाम वैश्विक मसलों पर भारत क्या रूख अपनाता है, उसका न केवल मानवता के भविष्य पर बल्कि दुनिया के तमाम देशों के नजरिये को निर्धारित करने में और विश्व की दिशा तय करने में भी गहरा असर पड़ेगा। इस लिहाज से देखा जाये तो भारत के उभार को व्यापक स्तर पर बेहद अच्छा माना जाता है, यानि भारत को एक ऐसा देश माना जाता है जो दुनिया में नैतिकता और अच्छाई के लिए लड़ाई करता है और बुरी चीजों का विरोध करता है। एक ऐसी दुनिया में जिसमें विचारों को लेकर जबरदस्त खीचतान मची हुयी है और जिसका बँटवारा सा हो चुका है, इन परिस्थितियों में भारत एक पुल के रूप में सामने आया है यानि एक ऐसे माध्यम के तौर पर उभरा है जिसकी आज के दौर में सबसे ज्यादा जरूरत है। इसके अलावा, विश्व में जब भी मूल्यों को लेकर सवाल उठते हैं तो भारत सामान्य तौर पर सही पक्ष के साथ खड़ा नजर आता है।

भारत का बढ़ता प्रभुत्व–

1. रूस–यूक्रेन सकटः विदेश नीति के मोर्चे पर एक साथ कई बातें हुयी हैं। इन बातों का सम्बन्ध वैश्विक राजनीति में भारत की बढ़ती भूमिका से है। हॉलाकि रूस–यूक्रेन के बीच शान्ति स्थापित करने के लिए भारत के पास कोई तयशुदा शान्ति प्रस्ताव नहीं है। पर सीधी बातचीत ना होने के कारण भारत संदेशवाहक की भूमिका निभाने और सघंर्श कम करवाने में भूमिका निभा सकता है। इसके लिए वह तैयार भी है। यूक्रेन संकट को खतम करवाने में भारत की ओर दुनिया की नजरे होने के कई कारण है भारत और रूस की पुरानी दोस्ती। यूक्रेन पर युद्ध शुरू किये जाने के बाद रूस पर पश्चिमी देशों ने प्रतिबन्ध लगाये थे। मगर भारत में इस प्रतिबन्ध की परवाह ना करते हुये रूस से व्यापारिक रिश्ते जारी रखे थे। भारत ने युद्ध के दौरान रिकार्ड स्तर पर रूस से तेल खरिदा। जुलाई के महीने मे जब पी0एम0 मोदी रूस गये थे तो पुतिन से गले मिले थें। पी0एम0 मोदी जब युक्रेन दौरे पर गये तो वह जेलेंस्की से भी गले मिले। पर्यवेक्षकों ने इसे भारत की सन्तुलित नीति के तौर पर देखा।

हाल ही में इटली की प्रधानमंत्री जाजिया मेलोनी ने कहा कि भारत और चीन जैसे देश यूक्रेन के सघंर्श को सुलझाने में भूमिका निभा सकते है। रूसी राष्ट्रपति पुतिन ने भी भारत जैसे दोस्तो की तारीफ की थी, जो मौजूदा सघंर्श का हल निकालना चाहते है।

2. भारत की आर्थिक कूटनीतिः भारत हाल के वर्शो में अपनी व्यापक आर्थिक और विदेश नीति रणनीति के हिस्से के रूप मे प्रमुख देशों के साथ आर्थिक साझेदारी और व्यापार समझौते पर ध्यान केन्द्रित कर रहा हैं। इन प्रयासों का उद्देश्य आर्थिक विकास को बढ़ावा देना, व्यापार के अवसरों में वृद्धि करना और राजनयिक सम्बन्धों को बढ़ाना है। भारत दक्षिण एशियाई सहयोग सगठंन (SAARC) के भीतर दक्षिण एशियाई मुख्य व्यापार समझौता और बहुक्षेत्रीय तकनीकी और आर्थिक सहयोग के लिए बंगाल की खाड़ी पहल (ठण्डैज्ब्) सहित क्षेत्रीय व्यपार समझौतों मे सक्रिय रूप से शामिल रहा है। इन समझौतों का उद्देश्य पड़ोसी देशों के बीच अन्तर क्षेत्रिय व्यापार और आर्थिक सहयोग को बढ़ावा देना है। इण्डिया एक्ट नीति के प्रणाम स्वरूप पिछले 10 वर्शों में व्यापार और निवेश की सम्भावनाये काफी बढ़ गई। भारत और असियान देशों के बीच अदान–प्रदान किये गये सामानों का मूल्य 2021 और 2022 के बीच बढ़कर 110.40 बिलीयन अमेरिकन डॉलर हो गया हैं। भारत में व्यापार सम्बन्धों को बेहतर बनाने के लिए अन्य देशों के साथ सहयोग करने की पहल की और जापान, दक्षिण कोरिया, सयुक्त अरब अमीरात और आस्ट्रेलिया जैसे देशों के साथ 13 मुख्य व्यापार समझौतों (थ्ज।) पर हस्ताक्षर किये। मुक्त व्यापार समझौते ऐसे समझौते है जिन पर दो या दो से अधिक देश स्वतन्त्र रूप से हस्ताक्षर करते हैं ताकि टैकिफ, आयात कोटा और नियति प्रतिबन्धों सहित व्यापार और निवेश बाधाओं को हटाया जा सके।

3. भारत की बहुराश्ट्रीय भूमिकाः जब साल 2023 पर नजर पड़ती है तो इस दौरान जी–20 के राष्ट्रपति और चन्द्रयान–3 के मिशन निश्चित रूप से भारत की प्रमुख उपलब्धियों में शामिल होते हैं। यह घटना कोविड–19 के बाद भारत के सम्भलने और मजबूत विकास से प्रेरित राष्ट्रीय मानसिकता की ओर इशारा करती है भारत की ओर से आयोजित जी–20 सम्मेलन में युवाओं और विकास पर फोकस किया गया। इसे सतत् विकास, विकास लक्ष्य, हरित विकास समूह में सुधार, डिजिटल सार्वजनिक ग्राहकों को बढ़ावा देने और महिलाओं के नेतृत्व वाले विकास को बढ़ावा देने के लिए एक स्तर के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

अनुरूपी लेखक/ संयुक्त लेखक

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-I, Issues-35, YEAR-Jan-Mar. 2025

पिछले दशक में भारत के 'पड़ोसी प्रथम' दृष्टिकोण ने नये सम्पर्कों को स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। श्रीलंका के आर्थिक संकट पर तत्काल प्रतिक्रिया ने महामारी के दौरान दिये जाने वाले समर्थन को और अधिक विस्तृत किया है। 'विस्तारित द्वीप' की नीति के कारण एशिया खाड़ी मध्य एशिया और हिन्द महासागर जैसे क्षेत्रों में हमारी उपस्थिति हुयी है। प्रशान्त महासागर से लेकर कैरेबियन तक हमारी पहलों ने भारत की पहुँच को और अधिक विस्तार दिया है। हरित विकास और सतत् विकास पर तेजी से ध्यान केन्द्रित कर रही दुनिया अब उस मूल्य को पहचान रही है, जो भारत सामने ला रहा है। हाल ही में एक ग्लोबल सोलर एलांयस और खाद्य सुरक्षा गठबंधन के लिए इटंरनेशनल सोलर एलांयस और डिजास्टर एबियोलॉजी एलांयस की शुरूआत हुयी है। भारत में विभिन्न ऊर्जाओं का प्रदर्शन और ऊर्जा सन्तुलन को मजबूत करना उल्लेखनीय है। भारत का सबसे बड़ा प्रभाव घरेलू बदलावों के कारण भी है। महामारी के दौरान न केवल बड़े पैमाने पर सर्वजनिक स्वास्थ्य व्यापाक प्रचार, बल्कि यन्त्रों में भी सुधार किया गया। बड़े पैमाने पर डिजिटल सुपरमार्केट की स्थापना ने सामाजिक–आर्थिक लाभ और सार्वजनिक सेवाओं के वितरण को बदल दिया है। भारत की गहरी लोकतान्त्रिक व्यवस्था ने प्रमाणिक और जमीनी राजनीति को भी जीवंत कर दिया है। सस्कृति और विरासत को महत्व दिया गया है। प्रौद्योगिकी और आधुनिकता को अपनाना पिछले दशक की प्रगति में समान रूप से दिखायी देता है। आज का भारत कैशलेस भुगतान 5 जो नेटर्वक चंद्रयान मिशन और डिजिटल लान्चिंग वाला देश है। यह सामान रूप से महिलाओं का राजनीतिक प्रतिनिधित्व और 'किसी को पीछे न छोड़ना' की राह पर चल रहा है। यह एक ऐसा समाज है जो अब अधिक योग्य सक्षम और जिम्मेदार है। यह एक ऐसा राष्ट्र बन रहा है जो भारत की कल्पना करता है।

4. भारत और बहुपक्षवादः वैश्विक सगठनों के साथ भारत की भागेदारी इसकी विदेश नीति का एक महत्वपूर्ण पहलू हैं क्योंकि यह राश्ट्र को एक ऐसा मंच प्रदान करता है। जहाँ से वह अपने राश्ट्रीय और अन्तर्राश्ट्रीय हितो की रक्षा कर सकता है। विशेश रूप से सयुक्त राश्ट्र, ब्रिक्स और विश्व व्यापार संगठन जैसे महत्वपूर्ण अन्तर्राश्ट्रीय सगठनों के साथ, भारत सरकार ने लगातार बातचीत की है। भारत 1945 में स्थापना के बाद से सयुक्त राश्ट्र का सदस्य रहा है और सयुक्त राश्ट्रकी विभिन्न निकायों और एजेंसियों में सक्रिय रूप से भाग किया है। भारत सयुक्त राश्ट्र सुरक्षा परिशद का स्थायी सदस्य बनने की आकांक्षा रखता है जिसे आम तौर पर पी5 के रूप में जाना जाता है। भारत का तर्क है कि दुनिया की सबसे बड़ी आबादी और सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में से एक के रूप में यह वैश्विक दक्षिण के हितों का प्रतिनिधित्व करने के लिए मेज पर एक सीट का हकदार है। कुल मिलाकर सरकार ने अनिवार्य रूप से पिछले प्रशासनों द्वारा निर्धारित अन्तर्राश्ट्रीय एजेडें को बढ़ाना और जारी रखा है। इसमें मोटे तौर पर भारत को दुनिया मे एक प्रमुख खिलाड़ी बनना, आंतकवाद से लड़ना और विकास लक्ष्यों को प्राप्त करना शामिल है। भारत ने स्वयं को एक सक्षम वैश्विक शक्ति के रूप में चित्रित करने के लिए एक रणनीति विकसित की है जो सयुक्तं राश्ट्र शान्ति अभियानों में अपनी भागेदारी के माध्यम से शान्ति व्यवस्था बनाये रखने और विवादों के समाधान के लिए समर्पित है।

5. भारत की सार्पेट पावरः भारत की सार्पेट पावर बॉलीवुड, योग और विशाल भारतीय प्रवासियों के माध्यम से बढ़ायी गयी है। बॉलीवुड जो विश्व स्तर पर प्रसिद्ध है, अपनी जीवंत सिनेमैटोग्राफी, आकर्षक सगीत और भारतीय सस्कृति और मूल्यों को दर्शाने वाली कथात्मक समृद्धि के लिए प्रसिद्ध है। यह सिनेमाई प्रभाव भारत के सास्कृंतिक पदचिन्ह को बढ़ाता है, एक विविध और जीवंत राश्ट्र के रूप में इसकी छवि को मजबूत करता है। भारत में उत्पन्न योग ने दुनिया भर में उछाल मारा है जो देश को समग्र जीवन शैली का प्रतीक है। दुनिया भर में फैले योग में केन्द्रों के साथ यह शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक कल्याण के लिए भारत की प्रतिबद्धता का प्रतीक है। दुनिया के सबसे बड़े प्रवासी भारतीयों मे से एक, भारतीय समुदाय एक सास्कृंतिक सेतु का काम करता है। ये समुदाय अपनी भारतीय जड़ों से गहराई से जुड़े हुये हैं और देश की परम्पराओं और मूल्यों को सक्रिय रूप से बढ़ावा देते है। कमला हैरिस, ऋशि सुनक, सुंदर पिचाई और सत्य नडेला जैसे भारतीय मूल के उच्च उपलब्धि बाले व्यक्ति भारत के बारे में सकारात्मक वैश्विक धारणा बनाने में योगदान करते हैं। उनकी सफलता राजनीति से लेकर प्रौधोगिकी तक विभिन्न क्षेत्रों में भारत के प्रभाव को रेखांकित करती है। जिसके देश की सार्पेट पावर और वैश्विक प्रभाव बढ़ता है।

वर्तमान विश्व में भारत की कुछ महत्वपूर्ण भूमिका–

1. सार्क को पुनर्जीवित करनाः SAARC (दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन) दक्षिण एशिया के आठ देशों का एक सगंठन है। भारत का सस्थांपक सदस्य है और हमेशा से इस सगंठन में एक प्रमुख खिलाड़ी रहा है। भारत हाल के वर्शो में सार्क को पुनर्जीवित करने का काम कर रहा है। और सगठंन को और अधिक प्रभावी बनाने के लिए कई पहलुओं का प्रस्ताव दिया है। इन पहलुओं में सार्क को अधिक समावेशी बनाना, क्षेत्रीय मुद्दों पर सहयोग बढ़ाना और सदस्य देशों के बीच सम्पर्क में सुधार करना शामिल है।

2. पर्याप्त मात्रा में बाहय सहायताः भारत दुनिया में बाहरी सहायता देने वाला दूसरा सबसे बड़ा देश है जिसने स्वतन्त्रता के बाद से विकासशील देशों को सचंयी रूप से 70 बिलियन डॉलर से अधिक का योगदान दिया है। भारत जी 20, ब्रिक्स और एसजीओ जैसे विभिन्न वैश्विक और क्षेत्रीय मचों का भी सदस्य है जो इसे अन्य प्रमुख शाक्तियों के साथ जुड़ने और वैश्विक एजेंडा को आकार देने का अवसर प्रदान करने है।

3.शान्ति के लिए एक बलः भारत कई वैश्विक शान्ति प्रयासों मे भी एक रचनात्मक भूमिका का निर्वहन कर रहा है। यह सयुक्त राश्ट्र शान्ति अभियानों में सबसे बड़ा योगदानकर्ता है और इसने अपने क्षेत्र में सघर्शो को हल करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। भारत ने स्वतन्त्र विदेश नीति अपनायी है, एक मजबूत अर्थव्यवस्था का निर्माण किया है। इन कारकों ने भारत को वैश्विक मंच पर अधिक प्रभाव दिया है।

प्रधानमंत्री मोदी की लीडरशिप में वैश्विक स्तर पर मजबुत नेतृत्व एवं आगे बढ़ने के लिहाज से देखा जाये तो हकीकत यह है कि भारत आज एक लोकतन्त्र के रूप में अकेला खड़ा है और अपने दम पर फैसले लेने में सक्षम है। पूरी दुनिया के राश्ट्रध्यक्ष और राजनेता जिस प्रकार से आज नयी दिल्ली के दौर कर रहे हैं और दुनिया भर के उद्यमी एवं व्यवसायी भारत के अलग–अलग हिस्सों में पहुँच रहे हैं वो इस बात का पुख्ता प्रमाण है कि अन्तर्राश्ट्रीय स्तर पर भारत की आज कैसी साख है। आज जब वैश्विक स्तर के मामलों में पड़ने से पश्चिमी देश अपने कदम पीछे खीचं रहे हैं। तब भारत कुशलता के साथ दुनिया के साथ अपने सम्बन्ध स्थापित कर वैश्विक स्तर पर मची खीचंतान में दखल देते हुये अपने लिए अनुकूल जगह बना रहा है। भारत को खुद पर और पारस्परिक रूप से जुड़ी दुनिया, दोनों पर ही अटूट भरोसा है। उत्तर से लेकर दक्षिण तक और पूर्व से लेकर पश्चित तक भारत ने विभिन्न देशों के साथ जिस प्रकार से अलग–अलग और विरोधाभासी लगने वाली साझेदारियाँ की है उनमें उसका यह विश्वास साफ झलकता है।

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-I, Issues-35, YEAR-Jan-Mar. 2025

भारत की सस्कृति और विरासत समृद्ध है। भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतन्त्र है जिसकी आबादी 1.2 बिलियन से अधिक है। पिछले दशक के दौरान देश का वैश्विक अर्थव्यवस्था में एकीकरण अर्थिक विकास के साथ हुआ है। भारत एक वैश्विक खिलाड़ी के रूप में प्रमुखता से उभरा है। भारत वैश्विक मंच पर एक महत्वपूर्ण देश बन रहा है। जैसे इसका प्रभाव बढ़ता जा रहा है, यह सम्भावना है कि भारत हमारे आस–पास की दुनिया को आकार देने में और भी महत्वपूर्ण भमिका निभाएगा।

तकनीक हमेशा नवयुग में प्रवेश का माध्यम रही है एवं इस बात में कोई नहीं है कि भारत आपने विविधता पूर्ण संस्कृति एवं आध्यात्म के साथ विकास के चहुँदिश मार्ग पर अग्रसर है। परंतु अभी इसे बहुत सारी बाधाओं का सामना करना पड़ रहा है। प्रतिस्पर्धात्मक अर्न्तराश्ट्रीय सामरिक परिवेश में भारत को अपनी भूमिका निभानी है। सभी का मानना है कि विश्व भारत को अगली महाशक्ति के रूप में देख रहा है। विश्व के समक्ष भारत ने सिद्ध कर दिया है कि लोकतंत्र और विकास साथ–साथ चल सकते है। भारत में क्षमता की कोई कमी नहीं है जिस दिन भारतीयों ने अपनी योग्यता का सही आकलन कर लिया तो फिर वो दिन दूर नहीं जब भारत पुनः विश्व गुरू कहलाएगा और हम वैश्विक स्तर पर अपनी ज्ञान–पताका फहराएंगें।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. ''बदलती वैश्विक व्यवस्था में अपनी उचित जगह हासिल कर रहा है भारत'', स्टीफन जे0 हार्पर, रायसीना क्रानिकल्स, 2024
2. ''भारत की बहुराष्ट्रिय भूमिका'', एस0 जसशंकर, कमल सदेंश, 2023
3. https://www.mea.gov.in/interviewdtl/33797
4. ''वैश्विक राजनीति में भारत की बढ़ती भूमिका'' प्रमोद जोशी, डिफेंस मॉनिटर 2024.

*****